IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर पर जीवविज्ञान तथा कला वर्ग विषय के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव सम्बन्धित धारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative study of gender discrimination perceptions of students of biology and arts subject at higher secondry level

निर्देशिका
डॉ. आरती गुप्ता
(असिस्टेंट प्रोफेसर)

प्रस्तुतकर्त्री
हितेश शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

❖ **शोध सार–**

मनुष्य ने जिस प्रकार अपनी सुरक्षा के लिए ''सामाजिक संविदा' की, उसी प्रकार अपने उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों के विभाजन भी परस्पर सहमति से कर दिया। तब न कोई प्रधान था, न कोई अप्रधान और जैसा कि प्रकृति ने बनाया भी था, दोनों ही परस्पर पूरक थे। पुरूष ने धीरे–धीरे अर्थोपार्जन का कार्य करने के कारण अपनी अघोषित श्रेष्ठता की स्थापना कर दी और स्त्री ने उसे चुपचाप स्वीकार भी कर लिया। स्त्री की मौन सहमति ने पुरूष को उनकी प्रधानता के भ्रम को दिनों–दिन स्त्रियों पर भाँति–भाँति की रोकथाम लगायायी जाने लगी और यह कार्य इतने समय से निरन्तर किया जाता रहा है कि स्त्रियाँ आज स्वयं भी इस मनोविज्ञान से ग्रस्त हो गयी है कि पुरूष उनसे श्रेष्ठ है और वे पुरूषों की अपेक्षा प्रत्येक क्षेत्र में कम है। इसी कारण से आज जब कोई स्त्री घर से बाहर निकलती है तो उसके साथ 5 या 10 वर्ष के ही बालक को उसकी सुरक्षा के ही भले घर वाले भेज दें क्योंकि पर श्रेष्ठ पुरूष की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। लिंगीय भेदभाव और रूढ़िबद्धता का लिंगीय पहचान पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका निरूपण यह शोध प्रस्तुत करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने उच्च माध्यमिक स्तर पर जीवविज्ञान तथा कला वर्ग विषय के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव से सम्बन्धित धारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए इस समस्या का चयन किया है। जिससे यह ज्ञात हो सके कि दो अलग–अलग विषय के विद्यार्थियों पर लैंगिक भेदभाव का कितना सकारात्मक तथा कितना नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

❖ **मूलशब्द :–** लैंगिक असमानता/भेदभाव, जीव विज्ञान, समाजशास्त्र, प्रजनन, बच्चों का सामाजीकरण, विद्यालय।

❖ **प्रस्तावना –**

विद्याविहीन नरः पशुः समानः

अर्थात विद्या के अभाव में मनुष्य पशु के समान है। मानव जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व है। प्रत्येंक व्यक्ति शिशु के रूप में कुछ पाश्विक प्रवृत्तियाँ लेकर इस असहाय विश्व में जन्म लेता है। शिक्षा के माध्यम से ही उन पाश्विक प्रवृत्तियों का शोधन एवं मार्गान्तीकरण होता है और वह मनुष्य बनता है।

शिक्षा सभ्य, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील मानव समाज के लिए एक आधारशिला का निर्माण करती है। शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है तथा सामाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली यंत्र माना जाता है। शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मानव मस्तिष्क के अंधकार को दूर करके मुक्ति का मार्ग दिखाती है। शिक्षा एक सभ्य समाज का आधार मानी जाती है। शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश फैलता है। साथ ही हमारी समस्याओं को सुलझा कर हमारे ज्ञान में विकास करती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास कर उन्हें पूर्णता प्रदान करती है।

अतः समाज में आज शिक्षा का अधिकार सभी को है चाहे वो बालक हो या बालिका। परन्तु फिर भी शिक्षा में आज भी लैंगिक भेदभाव को भली–भाँति देखा जा सकता है।

विद्यालय बच्चों में दूसरों के सापेक्ष खुद के अस्तित्व की समझ को विकसित करता है। लड़के व लड़कियों में लिंग आधारित विशिष्ट भूमिका की समझ स्कूल के प्रारम्भ में ही स्थापित हो जाती है। जिसे शिक्षक/शिक्षिका व परिवार के द्वारा प्रात्साहित किया जाता है। बच्चे भी लिंग सम्बन्ध एवं भूमिका, जाति, वर्ग इत्यादि को उसी रूप में देखता व समझता है।

विद्यालय समाज में व्याप्त लिंग भेंद को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

❖ **लैंगिक भेदभाव/असमानता –**

किसी समाज में जब लिंग के आधार पर बालक तथा बालिकाओं में भेदभाव किया जाने लगता है तब सामान्य शब्दों में इसी दशा को हम लैंगिक असमानता कहते है।

लैंगिक असमानता शब्द का उपयोग जैविकीय तथा सामाजिक दोनों अर्थों में किया जाता है। व्यक्ति के जैविक और शारीरिक लक्षणों के आधार पर पुरूष या महिला लिंग का अर्थ सेक्स है। जो इसका जीव विज्ञान दृष्टिकोण है। जबकि लिंग/सेक्स से जुड़ी सामाजिक या सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अर्थ जैंडर है। जसे इसका समाजशास्त्री दृष्टिकोण है।

❖ **जीव विज्ञान के अनुसार –**

लिंग का तात्पर्य एक विशेष जैविकीय रचना से है जिसमें कुछ विशेष प्रकार की शारीरिक और मानसिक विशेषताओं का समावेश होता है। इस दृष्टिकोण से लैंगिक विषमता का तात्पर्य उन सामाजिक मूल्यों और मानदण्डों से है जो सांस्कृतिक आधार पर स्त्रियों व पुरूषों में से किसी एक को दूसरे की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण मानते हुए उन्हें वैवाहिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में अधिक अधिकार देते हैं अतः स्पष्ट है कि लैंगिक विषमता की विवेचना जीवविज्ञान आधार पर जब एक समूह को दूसरे की तुलना में अधिक अधिकार मिल जाते हैं तो उसके व्यक्तित्व का विकास भी उसी तरह से होने लगता है।

❖ **समाजशास्त्र के अनुसार –**

लैंगिक विषमता वह दशा है जिसमें पाँच प्रमुख आधारों पर पुरूषों तथा स्त्रियों के बीच विभेद किया जाता है। यह आधार है–

- ✓ पारिवारिक तथा सामाजिक निर्णयों में स्त्री–पुरूषों की भूमिका।
- ✓ स्त्री–पुरूषों को प्राप्त सामाजिक सहभागिता के अवसर।
- ✓ वैयक्तिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में प्राप्त स्वतंत्रता।
- ✓ स्त्रियों के प्रति मनोवृत्तियाँ तथा वास्तविक व्यवहार।
- ✓ राजनीतिक जीवन में स्त्रियों के अधिकारों की सीमा।

❖ **समस्या कथन**

उच्च माध्यमिक स्तर पर जीवविज्ञान तथा कलावर्ग विषय के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव सम्बन्धित धारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण–

1ण **लैंगिक असमानता/भेदभाव –**

किसी समाज में जब लिंग के आधार पर बालिका तथा बालक में भेदभाव किया जाने लगता है तब सामान्य शब्दों में दशा को लैंगिक असमानता कहते है।

2ण **जीव विज्ञान –**

जीव विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की तीन विशाल शाखाओं में से एक है। यह विज्ञान जीव, जीवन और जीवन प्रक्रियाओं के अध्ययन से सम्बन्धित है।

3ण **समाजशास्त्र –**

समाजशास्त्र शब्द लैटिन भाषा के ''सोशियस'' और ग्रीक भाषा के ''लोगस'' शब्द से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ ''समाज का विज्ञान'' या समाज का अध्ययन है।

समाज का अर्थ –

आर टी लैपियर के अनुसार –

''समाज मनुष्यों के एक समूह का नाम नहीं है। बल्कि उनमें तथा उनके बीच में उत्पन्न होने वाली अंतक्रियाओं के रूपों के जटिल प्रतिमान को कहते है।'' संक्षेप में समाज मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्धों को कहते हैं।

शास्त्र या विज्ञान का अर्थ –

जे. एफ. क्यूबर के अनुसार ''विज्ञान पर्यवेक्षण और पुनः पर्यवेक्षण की क्रिया के द्वारा संसार की समानताओं की खोज करने की विधि है, जिसके परिणाम, सिद्धान्तों के रूप में प्रकट किये जाते है तथा ज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित और संगठित किये जाते हैं।''

4ण प्रजनन

प्रजनन द्वारा कोई जीव (वनस्पति या प्राणी) अपने ही सदृश किसी दूसरे जीव को जन्म देकर अपनी जाति की वृद्धि करता है। जन्म देने की इस क्रिया को जनन कहते हैं। जनन जीवितों की विशेषता है।

5ण बच्चों का सामाजीकरण –

सामाजीकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके फलस्वरूप नवजात शिशु आगे चलकर समाज का एक उत्तरदायी सदस्य बनता है। इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण बात बालक का पालन–पोषण कैसे किया जाए कि वह समाज का एक योग्य सदस्य कहलाए।

6ण विद्यालय –

टी.पी.नन के अनुसार ''एक राष्ट्र के विद्यालय उसके जीवन के अंग है, जिनका विशेष कार्य है उसकी आध्यात्मिक शक्ति को दृढ़ बनाना, उसकी ऐतिहासिकता की निरन्तरता को बनाये रखना, उसकी भूतकाल की सफलताओं को सुरक्षित रखना और उसके भविष्य की गारन्टी करना।''

❖ **अध्ययन के चर –**

प्रस्तुत अध्ययन में दो चरों को प्रस्तुत किया गया है।

- ✓ स्वतंत्र चर – जीवविज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थी
- ✓ आश्रित चर – विद्यार्थियों में लैंगिक भेदभाव

❖ **शोध के उद्देश्य –**

प्रस्तुत शोध निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है–

- ○ उच्च माध्यमिक स्तर के जीवविज्ञान के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव से सम्बन्धित धारणा का अध्ययन करना।
- ○ उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव से सम्बन्धित धारणा का अध्ययन करना।
- ○ उच्च माध्यमिक स्तर के जीवविज्ञान तथा कला वर्ग दोनों के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव से सम्बन्धित धारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

❖ **परिकल्पना –**

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- ○ उच्च माध्यमिक स्तर जीव विज्ञान के छात्र तथा कला वर्ग के छात्र के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मकता के सम्बन्धी धारणाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- ○ उच्च माध्यमिक स्तर पर जीवविज्ञान के विद्यार्थियों तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों के लैगिक भेदभाव के तुलनात्मकता के सम्बन्धी धारणाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

❖ **शोध विधि –**

प्रस्तुत शोध में सउद्देश्य विधि व यादृच्छिक विधि का चयन किया गया है।

❖ **शोध का परिसीमांकन –**

- ○ समस्या का क्षेत्र व्यापक होने के कारण सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन संभव नहीं है। अतः प्रस्तुत अध्ययन जयपुर शहर तक ही सीमित है।
- ○ प्रस्तुत अध्ययन में शोध कार्य के लिए सरकारी विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों को लिया गया है।
- ○ प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के 50 बालक व बालिकाओं पर किया गया है।
- ○ शोध कार्य मं सउद्देश्य व यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है।
- ○ प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित उपकरण प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।
- ○ प्रस्तुत शोध जीवविज्ञान तथा कला वर्ग विषय के विद्यार्थियों पर किया गया है।

❖ **शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –**

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के रूप उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों (50 लड़के + 50 लडंकियों) का चयन किया गया है।

❖ **शोध में प्रयुक्त उपकरण –**

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण, प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। जो कुछ आयामों पर आधारित है।

1. सामाजिक ब. पारिवारीक स. शैक्षणिक

❖ **सांख्यिकीय प्रविधियाँ –**

शोध कार्य में विश्वसनीय परिणाम निश्चित करने हेतु उच्च एवं विश्वसनीय सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ो का सारणीयन एवं विशलेषण

परिकल्पना 1. उच्च माध्यमिक स्तर जीव विज्ञान के छात्र तथा कला वर्ग के छात्र के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मकता के सम्बन्धी धारणाओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–परीक्षण	
जीव विज्ञान के छात्र	25	46	7.78	0.60	स्वीकृत
कला वर्ग के छात्र	25	44	8.79	0.60	

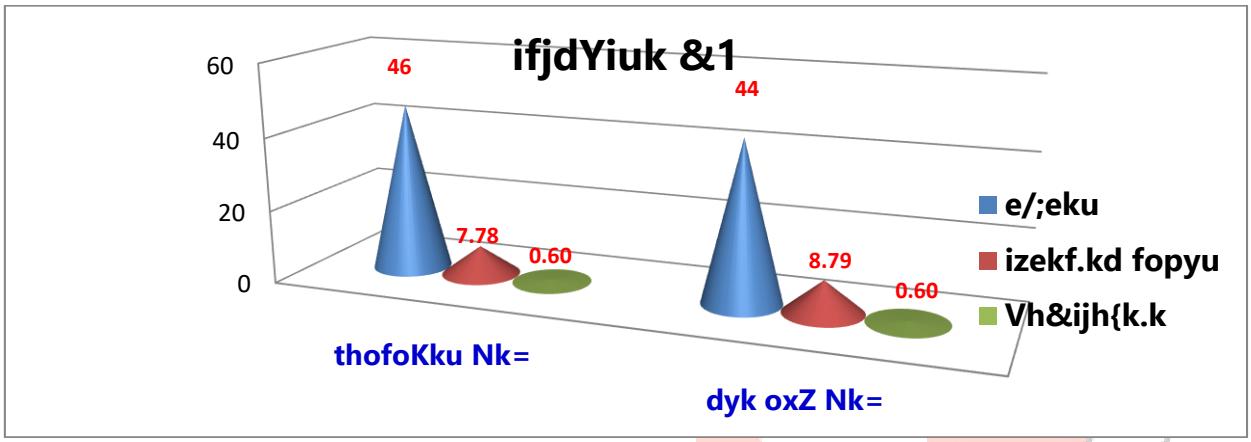

विश्लेषण एवं व्याख्या –

उपरोक्त तालिका उच्च माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान के छात्र एवं कला वर्ग के छात्र के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित आँकड़ों को प्रदर्शित करती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि जीव विज्ञान के छात्र तथा कला वर्ग के छात्र के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 46 एवं 44 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी अनुपात का मान 0.60 प्राप्त हुआ है। डी एफ 98 पर सार्थक का स्तर 0.01 पर सारणी टी मूल्य 1.98 है। गणना से प्राप्त मान 0.60, सारणी से प्राप्त मान 1.98 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान के छात्र तथा कला वर्ग के छात्र के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मकता सम्बन्धी सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 2. उच्च माध्यमिक स्तर जीव विज्ञान के विद्यार्थियों तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मकता के सम्बन्धी धारणाओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–परीक्षण	
जीव विज्ञान के विद्यार्थियों	25	47	8.20	0.58	स्वीकृत
कला वर्ग के विद्यार्थियों	25	45	8.75	0.58	

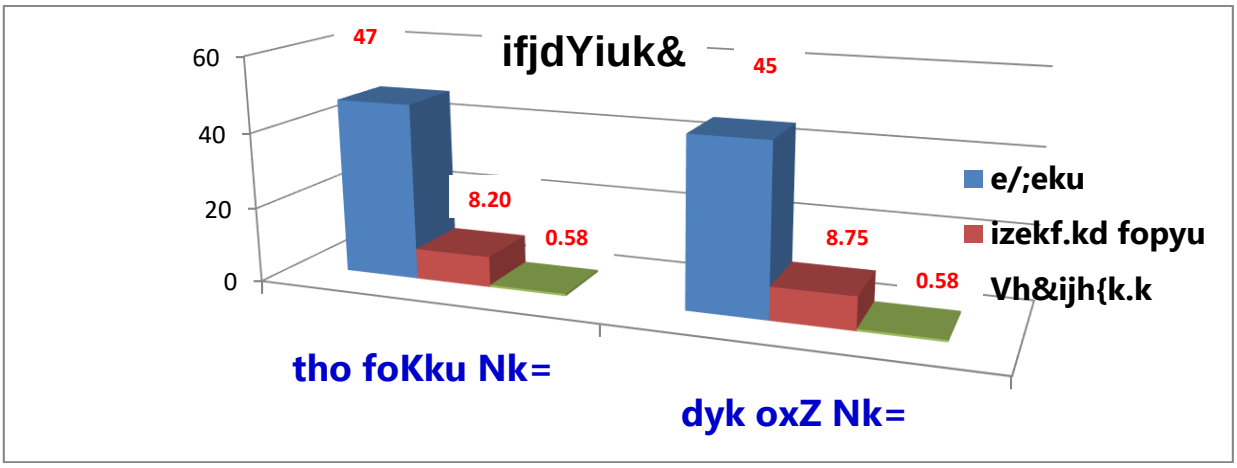

विश्लेषण एवं व्याख्या –

उपरोक्त तालिका उच्च माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान के विद्यार्थियों एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित आँकड़ों को प्रदर्शित करती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि जीव विज्ञान के विद्यार्थियों तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 47 एवं 45 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी अनुपात का मान 0.58 प्राप्त हुआ है। डी एफ 98 पर सार्थक का स्तर 0.01 पर सारणी टी मूल्य 1.98 है। गणना से प्राप्त मान 0.58, सारणी से प्राप्त मान 1.98 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान के विद्यार्थियों तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव के तुलनात्मकता सम्बन्धी सार्थक अन्तर नहीं है।

❖ **निष्कर्ष –**

उपरोक्त तालिका 1 व 2 के परिणामों के माध्यमिक स्तर के जीवविज्ञान तथा कलावर्ग के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव सम्बन्धी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में लैगिकता के बारे में भेदभाव नहीं पाया जाता है।

अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर लैंगिक भेदभाव प्रदर्शित नहीं होता है। जिसका कारण हो सकता है कि वर्तमान युग में परिवार में, विद्यालय में, समाज में समय–समय पर लैंगिकता के सम्प्रत्यय से सम्बन्धी कोई न कोई अभियान चलाये जाते हैं। जिससे आज की पीढी लैंगिकता को लेकर जागरूक है।

❖ **सुझाव –**

अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर लैंगिक भेदभाव के सन्दर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं–

- अध्ययन में निष्कर्ष सकारात्मक है अतः वर्तमान की तरह भविष्य में भी यही परिणाम आए इसके लिए परिवार से अच्छी शुरूआत होनी चाहिए अर्थात परिवार में लड़का तथा लड़की से सम्बन्धी भेदभाव को प्रदर्शित नहीं किया जाए।
- समाज में दोनों लिंगों को प्रत्येक क्षेत्र में समान अवसर मिलते रहने चाहिए।
- विद्यालय में अध्यापकों को किसी भी प्रकार से लैंगिक भेदभाव को प्रदर्शित नहीं करना चाहिए फिर वो चाहे प्रार्थना पंक्ति की बात हो या मैदान की साफ–सफाई की।

❖ **संदर्भ ग्रन्थ सूची –**

- लिंग, विद्यालय एवं समाज (डॉ. प्रतिमा त्रिपाठी), अविराम कॉलेज ऑफ एजुकेशन, झारखण्ड
- भारतीय आधुनिक शिक्षा – अक्टूबर 2011 (ncert.nic.in/indian-journal.html)
- भारतीय आधुनिक शिक्षा – जुलाई 2018 (ncert.nic.in/indian-journal.html)
- लिंग एवं शिक्षा इकाई –2 पाठ्यक्रम में लैंगिक मुद्दे
- दैनिक भास्कर https://www.bhaskar.com
- www.ncertbooks.ncert.gov.in
- एस बीपीडी पब्लिशिंग हाउस
- 2017-19 dessertation (M.ed)
- 2013-14 dessertation (M.ed)
- www.researchineducation.in
- web.http//wikipedia.org/students satisfaction
- www.shodhganga.inflibnet.ac.in
- www.google.com